रूचियाँ एवं उनका विकास

शिव प्रताप श्रीवास्तव*

रूचि व्यक्तित्व का अंग है। रूचि एक प्रभावपूर्ण अनुभव या प्रेरक शक्ति की भाँति है जो ध्यान को किसी व्यक्ति वस्तु अथवा क्रिया की ओर उन्मुख करती है। इसमें अपनी ही सक्रियता के कारण उत्तेजना उत्पन्न होती हैं। रूचि एक मानसिक संरचना है जो व्यक्ति एवं वस्तु के प्रति सम्बन्ध जोड़ती हैं। रूचि एक आन्तरिक प्रेरक शक्ति है, जो हमें ध्यान देने के लिए किसी वस्तु, व्यक्ति या क्रिया के प्रति प्रेरित करती है।[1] रूचि को सामान्य अर्थों में सम्बन्ध की भावना भी कहते हैं।[2] रूचि व्यक्तित्व का अंग है। रूचि एक प्रभावपूर्ण अनुभव या प्रेरक शक्ति की भाँति है जो ध्यान को किसी व्यक्ति वस्तु अथवा क्रिया की ओर उन्मुख करती है। इसमें अपनी ही सक्रियता के कारण उत्तेजना उत्पन्न होती हैं। रूचि एक मानसिक संरचना है जो व्यक्ति एवं वस्तु के प्रति सम्बन्ध जोड़ती हैं।

मानव को जो भी अच्छा लगता है उसमें उसकी रूचि उत्पन्न हो जाती है। रूचि उत्पन्न करने के लिये यह बहुत आवश्यक नहीं है कि उसमें तथ्य सम्बन्धी योग्यता भी हो। उदाहरण के लिये संगीत सुनने अथवा गीत गाने में व्यक्ति की रूचि हो सकती है परंतु यह आवश्यक नहीं है कि रूचि उत्पन्न होते ही या कुछ समय बाद वह व्यक्ति संगीत के ताल अथवा गीत के आरोहण–अवरोहण का ज्ञाता हो जाये। यह तो उसकी रूचि की तीव्रता, जिज्ञासा तथा योग्यता पर निर्भर करता है।

एक मनुष्य की मानसिक क्रियाएँ अत्यन्त गिनी–चुनी होती हैं। गिनी–चुनी क्रियाओं के आधार पर ही मनुष्य की शारीरिक एवं बाह्य क्रियाएँ निर्भर करती हैं। मनुष्य क्या काम करना पसन्द करता है, यह मनुष्य की मानसिक क्रियाओं पर निर्भर करता है। कहा गया है कि तीन मित्र किसी रमणीक पहाड़ी स्थान का भ्रमण करने हेतु गये। इन तीन मित्रों में एक भूगर्भवेत्ता, एक वनस्पतिशास्त्री एवं एक कवि था। रमणीक स्थान पर जाकर भूगर्भवेत्ता ने वहाँ की मिट्टी तथा चट्टानों का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया, वनस्पतिशास्त्री ने वहाँ के पेड़–पौधों का निरीक्षण करना शुरू कर दिया तथा कवि महोदय ने वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन किया। इस प्रकार इन व्यक्तियों ने पृथक्–पृथक् रूप से वहाँ की विभिन्न वस्तुओं से अपना सम्बन्ध स्थापित किया। यह सम्बन्धकारिकता उन व्यक्तियों की रूचि द्वारा निर्धारित होती है। अब प्रश्न यह है कि 'रूचि क्या है जिसके कारण तीनों मित्रों की अवलोकन सामग्री पृथक्–पृथक् हो गयी?' स्टाउट ने रूचि को आत्मनिष्ठता के रूप में ही प्रयोग किया है। मेरी रूचि संगीत में है, पर इसके लिए यह आवश्यक नहीं कि मैं कोई दूसरा काम न कर सकूँ। संगीत में रूचि रखते हुए भी मैं अपना कोई दूसरा काम संगीत के अलावा कर सकता हूँ। संगीत के प्रति मेरी जो रूचि है उस पर दूसरे काम का असर नहीं पड़ता है, क्योंकि यह मस्तिष्क का एक स्थायी भाव है। इस प्रकार रूचि को हम 'पसन्द' कह सकते हैं।

रूचि को अंग्रेजी भाषा में पदजमतमेज कहते हैं। यह शब्द लैटिन भाषा से लिया गया है। किसी तथ्य या प्रतिक्रिया के प्रति ध्यान केन्द्रित करना रूचि है। यह बालक की सफलता तथा असफलता की कुंजी है। इसलिए रूचि का व्यक्ति के जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है। उनकी अपनी रूचियों का उनके मानवीय कार्यो पर सीधा प्रभाव पड़ता है। समस्त क्रिया कलाप रूचि पर आधारित होता है। जब तक कोई भी तथ्य या वस्तु व्यक्ति के आकर्षित नहीं करती तब तक उसकी उसमें रूचि उत्पन्न नहीं होती। रूचियों को केवल जन्मजात समझना भ्रममूलक धारणा है। वस्तुतः ये अर्जित होती है और मूल प्रवृत्तियों तथा वातावरण की विशिष्ट शक्तियों के सतत् संघर्ष से ही इनका विकास होता है। आंतरिक या व्यक्तिगत तत्त्व और बाह्य वातावरण सम्बन्धी तत्त्व दोनों ही व्यक्ति की रूचियों को प्रभावित करते है।

स्ट्रॉग महोदय ने रूचि की तुलना नौका से की है। अपने उदाहरण में वे कहते हैं कि मोटर नौका की गति एवं रडार नौका की दिशा निर्धारित करते हैं तथा मोटर तथा रडार दोनों ही दूरी तय करने के लिये उत्तरदायी हैं। यदि मोटर को मनुष्य की योग्यता मान लें तथा दूरी को निष्पत्ति मान लें तो यह कह सकते हैं कि मानव जीवन में प्राप्त निष्पत्तियाँ मनुष्य की योग्यता एवं रूचि पर निर्भर है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि, "रूचि कोई पृथक् इकाई न होकर समस्त मानव व्यवहार का एक पहलू है।"[3]

मैकडूगल के अनुसार "रूचि एक गुप्त अवधान होता है और अवधान रूचि का क्रियात्मक रूप है।"[4]

ड्रेवर के अनुसार "रूचि अपने क्रियात्मक रूप में एक मानसिक संरचना है।"[5]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है रूचि में निम्न विशेषताएँ पायी जाती हैं–

1. रूचि व्यक्तित्व का एक अंग है।
2. रूचि आवश्यक रूप से अभियोग्यता एवं योग्यता से सम्बन्धित हो, ऐसी बात नहीं है।
3. रूचि वंशानुक्रम तथा वातावरण से प्रभावित होती है।

***शोधछात्र, शिक्षाशास्त्र उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा धारवाड़–580 001**

4. व्यावसायिक एवं अव्यावसायिक रूचियाँ साथ–साथ चलती हैं।

5. आयु बढ़ने के साथ–साथ रूचियों की विभिन्नता समाप्त हो जाती है।

रूचि के प्रकार – रूचियों के प्रकार के सम्बन्ध में अनेक अध्ययन हुए हैं। इन अध्ययनों में सबसे महत्त्वपूर्ण अध्ययन **गिल्फोर्ड (1954)**[6] इनके इस अध्ययन में 33 रूचियों की परिकल्पना की गई है तथा इनके मापन के लिए विश्वसनीय परीक्षण को भी विकसित किया गया है। रूचि से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने पर हम रूचि के निम्नलिखित चार प्रकार का उल्लेख पाते हैं[7] –

1. **प्रदर्शित रूचि**–कुछ रूचियाँ ऐसी होती हैं जिन्हें व्यक्ति अपने शब्दों से व्यक्त न करके अपने व्यवहार से व्यक्त करता है। कुछ व्यक्ति क्रिकेट के मैच देखने के शौकीन होते हैं, कुछ व्यक्ति सड़क पर चलती युवतियों को बड़े गौर से आँखें फाड़कर देखते हैं, कुछ शान्त भाव से धार्मिक उत्सवों में भाग लेते हैं। यह सब प्रदर्शित रूचि के उदाहरण हैं।

2. **अभिव्यक्त रूचि**–जिन रूचियों को व्यक्ति शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है या जिनका ज्ञान हम पूछकर करते हैं वे अभिव्यक्त रूचियाँ कहलाती हैं, उदाहरण के लिए आपकी साहित्य सम्बन्धी रूचि क्या है? आप किस प्रकार के संगीत में रूचि रखते हैं? इत्यादि प्रकार के प्रश्नों के द्वारा इन रूचियों को ज्ञात करते हैं। ये रूचियाँ अधिक विश्वसनीय नहीं होती हैं।

3. **प्रपत्रित रूचि**–जिन रूचियों का ज्ञान प्रमापीत रूचि प्रपत्रों तथा परीक्षणों के माध्यम से होता है उन्हें प्रपत्रित रूचि कहते हैं।

4. **परीक्षित रूचि**–यदि किसी व्यक्ति का किसी विषय में ज्ञान तथा उस ज्ञान की उपलब्धि के प्राप्तांक समान हों तो कहा जाता है कि व्यक्ति उस ज्ञान की प्राप्ति में रूचि रखता है। इसका माप विभिन्न निष्पत्ति परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है।[8]

रुचियों का विकास किस निश्चित आयु से प्रारम्भ होता है, यह ज्ञात नहीं है। विभिन्न व्यक्तियों में ये विभिन्न आयु–कालों में प्रकट होती हैं पसंदगी और नापसंदगी का उदय अवश्य ही बहुत प्रारम्भिक अवस्था में हो जाता है। बच्चे रुचियों को व्यक्त और चुनावों का संकेत कर सकते हैं और तब करते हैं, जब उनसे ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं कि बड़े होने पर वे क्या करना पसंद करेंगे। फिर भी अनेक बच्चों के लिए ऐसी व्यक्त रुचियाँ आसानी से बदलती रहती हैं। अपने खेलों में बच्चे व्यावसायिक भूमिकाएँ लिया करते हैं, यद्यपि अभिनय की ये भूमिकाएँ द्रष्टा को अयथार्थ प्रतीत हो सकती हैं। छोटे बालक घुड़सवार, गोपाल, पुलिस के सिपाही या अग्निशामक व्यक्तियों का अभिनय करते हैं। छोटी बालिकाएँ जननी या शिक्षिका का अभिनय करती हैं। बालक–बालिकाएँ मिलकर

डॉक्टर और नर्स की भूमिकाएँ अदा करते हैं। लेकिन वास्तविक चुनाव का काल बाद में आता है। बच्चे की व्यवसाय के प्रति अभिरूचि को परिवर्तित करने में माता–पिता का व्यवसाय भी प्रभाव डालता है (हैलाल्ड, 2010)[9]।

रुचि मापन के एक विशेषज्ञ का विश्वास है कि रुचियाँ साधारणतः हाईस्कूल–प्रवेश तक पूर्ण विकसित हो जाती हैं और कभी–कभी इससे पहले भी। किशोरावस्था के मध्य तक मापित रुचियों का व्यवस्थित रूप स्पष्ट हो जाता है तथा विश्वासनीयता और स्थायित्व की दृष्टि से एक बड़े हद तक वे प्रौढ़ रुचियों से तुलनीय है हालांकि उसके बाद भी परिवर्तन होते हैं।

सन्दर्भ :–

1. सारस्वत, मालती (2013), शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, पृ. 367–368.
2. वर्मा, रामपाल सिंह और उपाध्याय, राधावल्लभ, शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन, 1992, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 254.
3. वर्मा, रामपाल सिंह और उपाध्याय, राधावल्लभ, शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन, 1992, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 255.
4. माथुर, एस.एस., शिक्षा मनोविज्ञान, 1993, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 471.
5. मालती, सारस्वत, शिक्षा मनोविज्ञान, 1997, आलोक पब्लिकेशन, लखनऊ, पृ. 308.
6. गिलफोर्ड, जे.पी. (1954), ए फैक्टर एनालिसिस स्टडी ऑफ ह्यूमन इनटरेस्ट, अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, वाशिंगटन, पृ. 26.
7. सिंह, रामपाल एवं अन्य (2005), व्यावहारिक मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 28.
8. सिंह, रामपाल एवं अन्य, व्यावहारिक मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2005.
9. Hereld D. Grolevant (2010): Environmental Influences of Vocational Interest Development in Adolesents from Adoptive and Biological Families, University of Texas at Austin.